Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

साहित्य क्षेत्र में अनुवाद की भू मका

डॉ. सुगंधा हिंदुराव घरपणकर
अ धव्याख्याती, हिंदी वभाग,
राजा शवछत्रपती कला एवं
वा णज्य महा वद्यालय, महागांव,
जि. कोल्हापूर. महाराष्ट्र

प्रस्तावना :

अनुवाद एक साहित्यिक वधा है। अनुवाद को मूल लेखन पर आधारित भाषांतर कह सकते है। कसी भाषा में कही या लखी गयी बात का कसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद **(Translation)** कहलाता है। अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है। अनुवाद एक भाषा के कथन को उसकी समग्रता के साथ दुसरी भाषा में अंतरिक करने की रचनात्मक वधा है। प्रा चन काल से अनुवाद की प्र क्रया चलती आ रही है। प्रा चन परंपरा में गुरु जो कहते थे यही शष्य दोहराता था इसे भी 'अनुवाद' या 'अनुवचन' कहते थे। गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' में अनुवाद का इसी अर्थ में प्रयोग कया है। 'सुनत फर हरि गुण अनुवादा'। अर्थात प्रा चन संस्कृति में अनुवाद का शब्दप्रयोग, अवश्य मलता है। इससे भी पहले 'बौद्ध ग्रंथ की' संस्कृत से चीनी भाषा में अनुवाद कुमारजीव ने कीया था। यद वश्व की सबसे प्राचीन **(68** ई) प्रंट की पुस्तक है। यह वज्रच्छेदिकाप्रज्ञापारि मनासूत्र नामक ग्रंथ था। साहित्यिक अनुवाद अपने मूल

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रस्थान में एक सर्जनात्मक और सांस्कृतिक कर्म है। अर्थात 'अनुवाद' प्राचीन और अत्यंत महत्वपूर्ण भाषायी प्र क्रया है।

बीसवीं सदी को अनुवाद का युग कहा गया है। इस युग में भाषा संपर्क अर्थात भन्न भाषा भाषी समुदायों में संपर्क की स्थिति प्रमुख रुप से उभर कर आयी। "अनुवाद एक भाषा के कथन को उसकी समग्रता के साथ दूसरी भाषा में अंतरित करने की रचनात्मक वधा है। वह अंतरंग की यांत्रिक प्र क्रया नहीं अ पतु 'मौ लकता' से स्पर्श करता हुआ कृतित्व है। एक मूल अनुवादक अपने आपको मूल लेखक के चंतन की भू म पर प्रतिष्ठित कर अपनी सूझ-बूझ एवं प्रतिभा के बल पर स्त्रोत सामग्री को इस कौशल से प्रस्तुत करता है क उसमें मूल कथ्य तथा उसकी शैली का अंदाज रचना के स्तर तक पहुँच सके। दूसरे शब्दों में उसका अनुवाद 'भाषांतर' प्रतीत न हो, वरन् उसमें एक भौतिक रचना का आभास हो।"[1] 'अनुवाद' ही वह उपकरण औजार तथा माध्यम है जिससे भारतीय साहित्य की वपुल धरोदर और समकालीन रचनाशीलता को एक दूसरे के सम्मुख रखा जा सकता है। भारतीय साहित्य को एकभा षक संप्रेषणीयता की स्थिति से अनुवाद के माध्यम से द् वभाषी अथवा बहुभाषी संप्रेषणीयता की स्थिति में लाया जा सकता है। बहु-भा षकता, संस्कृति बहुलता और सैद्धान्तिक व भन्नता, भौगो लक जटिलता आदि स्वतंत्र भारत की व शष्टताएँ हैं जो अन्यत्र दुर्लभ है। भारत बहुभा षक देश है। यही राष्ट्रीय की अस्मिता और शक्ति है। भारत अनेकता में एकता का मलाप है। हमारे देश की बहुभा षकता की वशेषता है क वै वध्यपूर्णता सांस्कृतिक बहुलता लोगों के आचार- वचार, धा र्मक अध्यात्मिक चंतन, राजनीतिक, सामाजिक वचार आदी है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुवाद के लए सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है साहित्य। वश्व के श्रेष्ठ साहित्य का परिचय अनवुाद के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। प्राचीन भाषाओं के वाङ्मय को आधुनिक युग के पाठक अनुवाद के सहारे समझ पाते है। साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन को सरल बना देता है। साथ ही अंतरराष्ट्रीय संबंध अनुवाद का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। अर्थात साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का कार्य बहुमुखी और बहुआयामी बन चुका है। पूरे वश्व में आज अनुवाद केंद्रित स्थिति में है, "बीसवीं सदी अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी है और इस कारण इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है।"[2]

अनुवाद एक रचनात्मक एवं सृजनात्मक कला है। अनुवाद में मूल रचना के स्थानापन की क्ष्मता होती है। आधुनिक हिंदी साहित्य् के वकास में अनुवाद का बहुत बडा योगदान है। ईसाई धर्म प्रचारकों ने बाइबिल के हिंदी अनुवाद कया उन्होंने ही शक्षा संबंधी पुस्तकों का लेखन और अनुवाद कया जॉन गल क्रस्ट ने हिंदी, उर्दू पाठ्यपुस्तकों का लेखन और अनुवाद करना शुरु कया। राजा लक्ष्मण संह के का लदास के ग्रंथों का अनुवाद कया। पश्चिमी साहित्य के अनुवाद में भारतेंदु युग महत्वपूर्ण रहा है। इसमें ज्ञान और वचारों का आगमन पथ प्रशस्त कया। द् ववेदी युग में खडी बोली हिंदी को एक समर्थ साहित्यिक रूप मला इसने आचार्य महावीर प्रसाद द् ववेदी जी की पत्रिका 'सरस्वती' द्वारा पत्र सम्पादित साहित्य महत्वपूर्ण था। इसमें मधुसुदन दत्त, बं कमचंद्र, र वंद्रनाथ टैगोर आदि लेखक थे। जिनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ। मै थ लशरण गुप्त ने भी अनुवाद का कार्य कया। इस युग में अंग्रेजों के उपन्यास और नाटकों का अनुवाद हुआ। इस युग में मौ लक लेखन भी हुआ। कहानी उपन्यास नाटक तथा अन्य वधाओं का भी अनुवाद हुआ।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बीसवीं शती में साहित्य का वकास में अनुवाद का काफी योगदान है। छायावाद प्रगतीवाद, प्रयोगवाद, मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद पाशात्य चंतनों ने हिंदी साहित्य को प्रभा वत कया है। उनके अनुवादों की भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण देन रही है। साथ ही जीवन के प्रादयो गकी कार्यकलापो के व वध स्तरीय कार्यों पर अनुवाद हुआ। समस्त वश्व में इस सारे साहित्य का आदान- प्रदान अनुवादों के माध्यम से ही रहा है। अनुवादों ने सारी वश्व मानवता को जोडकर एक कर दिया है। हर एक भाषा का अपना एक साहित्य और इतिहास होता है। उस साहित्य को समाज तक पहुँचाने का काम अनुवाद करता है। हर एक लेखक समीक्षक की इच्छा होती है क अपनी रचना ज्यादा से ज्यादा लोग पढे। उनके वचार बहुसंख्य लोग जाने और प्रभा वत हो और रस साहित्य के लए ईच्छापूर्ति का साधन है अनुवाद जैसे हालावाद के क व बच्चन जी ने उमर खैय्याम की रुबाइयों के अंग्रेजी अनुवाद के आधार पर हिंदी अनुवाद मधुशाला के रुप में कया अर्थात साहित्य का वकास उसमें जुडनेवाली कृति में होता है। मातृभाषा को समृद्ध बनाने एवं राष्ट्र की प्रगति के लए सुंदर कृतियों तथा पारिभा षक वैज्ञानिक भौगो लक तथा तकनीकी ग्रंथों का अनुवाद वर्तमान युग की आवश्यकता बन गई है। आज इक्किसवी सदी नें जिस तरह वैज्ञानिक प्रगति हो रही है, नई नई तकनिक का वकास हो रहा है उसी तेजी से साहित्य का सृजन भी हो रहा है। अनुवाद का महत्व प्रा चनकाल में धर्म के प्रचार-प्रसार से लेकर आधुनिक युग में नवीनतम तकनीकी को जानने तक और उससे लाभन्वित होने में है।

अनुवाद एक ऐसी प्र क्रया है जो दो भाषाओं दो संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करती है। अर्थात इसके लए अनुवादक को दो भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। भाषा ज्ञान के व भन्न क्षेत्रों में प्रवेश करती है वैसे अनुवाद का

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वरूप भी बदलता जाता है। इस लए अनुवाद केवल साहित्य अनुवाद तक ही सी मत नहीं रह गया बल्कि तकनीक, व ध, प्रशासनिक और जनसंचार क्षेत्रों ने अनुवाद का दायरा बढाया है। आज साहित्यिक अनुवाद व्यवसाय के लए भी लया जा रहा है। आज भारत में अंग्रेजी का लोक प्रय साहित्य हिंदी या अन्य भाषा में रूपांतरित हो रहा है। अमेरिका युरोप में बहुत ही तेजी से इसका वकास तेजी से हो रहा है इन देशों का साहित्य जब मूल रूप में लाखों लोगों तक पहुँचता है तो उसका अन्य भाषा में तुरंत अनुवाद कर उसकी मार्केटींग की जाती है। आज भारत में वक्रम सेठ, खुशवंत संह, शोभा अरूंधती रॉय, चेनत भगत इ, लेखकों की कृतियाँ हिंदी में अनुदित होकर प्रका शत हुई है। और उन्होंने अच्छा व्यवसाय कया है। साहित्य की रचना की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही परंतु भारतेंन्दु युग में अनुवाद के माध्यम से साहित्यकारोंने पश्चिमी साहित्य के अनुवाद कर पथ प्रशस्त कया। द् ववेदी युग हिंदी भाषा के परिष्कार का युग था। उनके काल के परिवर्ती युग के अनुदित साहित्य के माध्यम से आधुनिक हिंदी साहित्य समृद्ध भी हुआ है। हिंदी की क वता नाटक कथा साहित्य तथा अन्य वधाओं के बदलते स्वरूप और शल्पगत परिवर्तन, चरित्र- चत्रण सम्बंधी नई अवधारनाओं के वकास को अनुदित साहित्य में गति प्रदान की। "भारतीय साहित्य क ऐसा इतिहास हमारे समक्ष आया जिसके फलस्वरूपव हिन्दी का रचनाकार अथवा त मल, तेलगु, मलयालम का रचनाकार केवल उस भाषा या क्षेत्र वशेष का कृतिकार नहीं रह गया अ पतु वह समस्त भारत की संवेदना का संवाहक बनकर जन-जन का गायक बना और अनुवाद का यह अवदान आज भी हिंदी भाषा को निरन्तर प्राप्त है।"[3]

अनुवादक रचना के मूल उद्देश्य को पूर्ण निष्ठा के साथ अपने हृदय में रखता है। मूल रचना के साहित्यिक सौंदर्य को कायम रखना है तो अनुवादक के

लए यह आवश्यक है क वह ऐसी शैली में लखे के स्वयं लेखक ही अनुवाद की भाषा में लख रहा है। आज साहित्य या कताबे वश्व पटल तक पहुँचने के लए मार्केटिंग और अच्छे अनुवावदक की आवश्यकता है। आज हिंदी साहित्य के वकास में अनुवाद की प्रमुख भू मका है अनुवाद का काम दो तरफा है। हिन्दी में भी श्रेष्ठ अनुदित हो और हिंदी का लखा अन्य भाषाओं में अनुदित हो। इस लए अनुवाद का काम जिम्मेदारी से भरा रहता है इस लए अनुवाद एक गतिशील वधा है। हिंदी पढनेवालों के लए अन्य साहित्य में अनुवाद कराना आवश्यक है। जैसे 'गार्फी' की अमर कथाकृति 'माँ' हम रूसी भाषा में से अनुवाद के बगैर हिन्दी में पढ नही सकते। अर्थात एक साहित्यिक वधा के रूप में अनुवाद और अनुवादक की अनिवार्यता आवश्यक है। आधुनिक भारतीय भाषा में र चत पदय साहित्य में काव्य और महाकाव्य प्रमुख है जिसमें हिंदी में र चत प्रयप्रवास, वैदही, वनवास, कामायनी, साकेत, उर्वशी और कुरूक्षेत्र आदि महाकाव्य भारतीय भाषा में अनुदित हुए है। गदय के क्षेत्र में कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, निबंध आदि साहित्यिक वधाओं का अंतरभा षक अनुवाद भारतीय साहित्य में वहित सामाजिक को दर्शाने के लए सहायक हुआ है। अर्थात भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता अनुवाद के माध्यम से ही साध्य है। अर्थात "अनुवाद कार्य की परम्परा को देखने से यह स्पष्ट है क अनुवाद सद्धांत सम्बधी चन्तन साहित्यिक कृतियों को लेकर ही अ धक हुआ है।"[4]

निष्कर्षत :

अनुवाद दो भाषाओं के बीच की दूरी दूर कर साहित्य रसास्वादन का मार्ग सुगम बना देता है जिससे भाषा की अज्ञानता की बाधा दूर हो जाती है। अनुवाद के माध्यम से ज्ञानार्जन के साथ साथ रसास्वादन की अनुभूति भी होती है। अर्थात

अनुवाद भाषागन बाधा को दूर कर ज्ञान, वज्ञान भाव और चन्तन को सर्वजन सुलभ बनाता है। अतः साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन में अनुवाद की अहम् भू मका है जो साहित्य में उसकी उपयो गता को स्वतः प्रभा वत करती है।

संदर्भ :

1. अनुवाद चंतन - एल.एन. शर्मा, सौ मत्र
2. अनुवाद स्वरूप और सद्धांत - डॉ.के.पी. शहा, पृष्ठ 2
3. प्रो. राजम ण शर्मा - अनुवाद वज्ञान, पृ. 193
4. अनुवाद सद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेश कुमार, पृष्ठ 19